उत्तर आधुनिक कहानी और विखंडित मानवतावाद

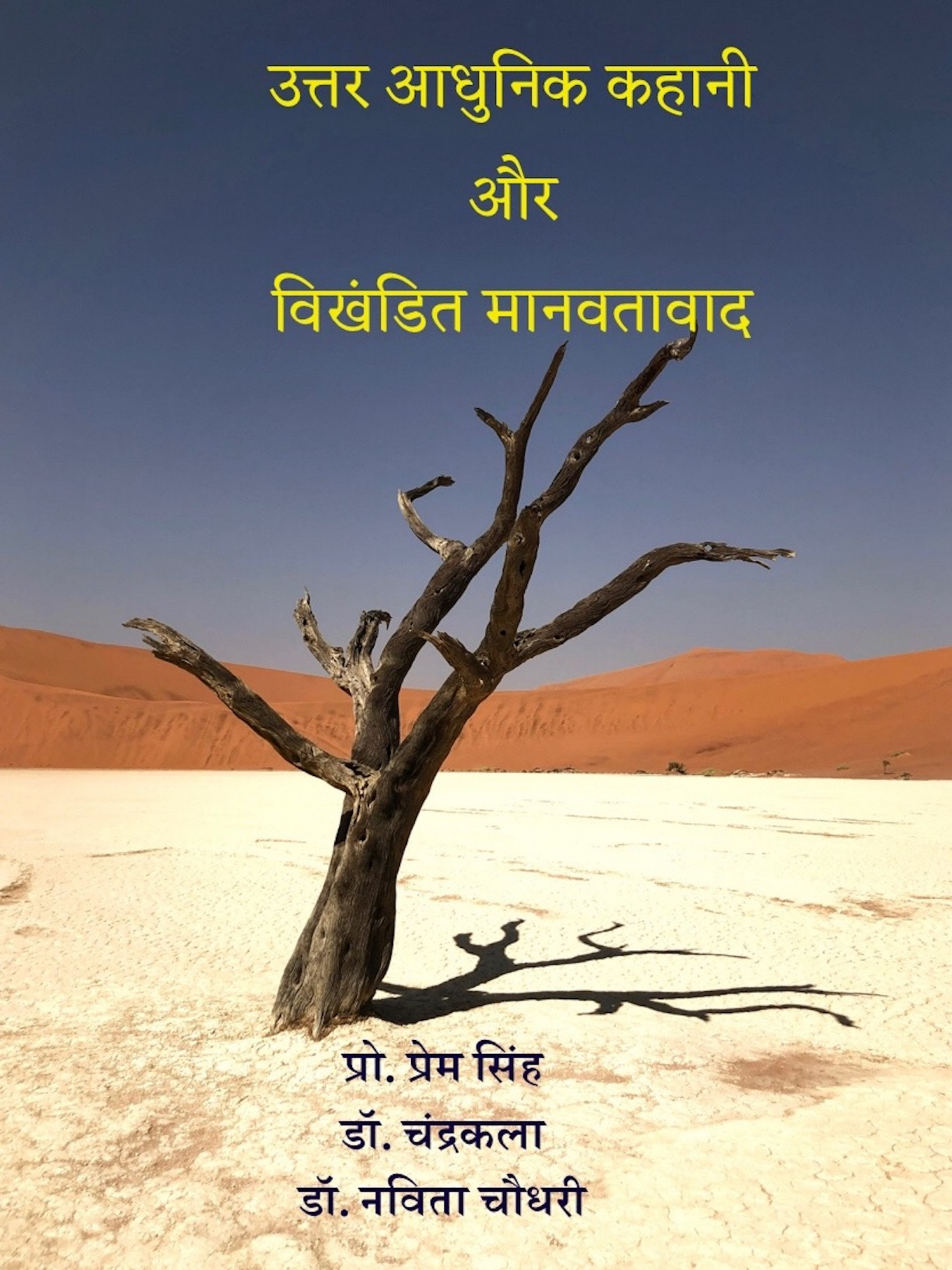

प्रो. प्रेम सिंह
डॉ. चंद्रकला
डॉ. नविता चौधरी

डॉ. चंद्रकला सिंह

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पी-एच. डी.।

एम.ए. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान स्नातकोत्तर डिप्लोमा (केन्द्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली), मीडिया में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

प्रकाशित कार्य : समसामयिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति और साठोत्तरी नाटक। पिछले तेरह वर्षों से दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में अध्यापन कार्य कर रही हैं।

संपादित पुस्तक : दिनकर और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, प्रेमचंद की प्रासंगिकता।

सम्पर्क : 10-ए, ओ.सी.एस. अपार्टमेंट, मयूर विहार फेस-1,
दिल्ली-91
दूरभाष : 011-22743920, मो. 9868249466
E-mail: drchanderkala.singh@gmail.com

डॉ. नविता चौधरी

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से 'भारतेन्दु की रचनाओं में लोक जीवन की अभिव्यक्ति विषय पर उपाधि प्राप्त।

प्रकाशन : 'हिंदी नाट्य-चिंतन' (2013) पुस्तक के अलावा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आलेख एवं समीक्षाएं प्रकाशित होती रही हैं।

सम्प्रति : देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में तदर्थ प्रवक्ता के रूप में कार्यरत।

सम्पर्क : एच.-303, डी.डी.ए.एल.आईपी. फ्लैट, मोलरबंद, नई दिल्ली।
मो. 9013891152, 9643967249
ई-मेल : navitapu@gmail.com

श्री नटराज

श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग
साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली 110053
फोन : 011 -22941694, मो. 9312754789
E-mail : shreenatrajprakashan@yahoo.in

ISBN 978-93-86113-59-7
9 789386 113597

भूमिका

संपूर्ण ब्रह्मांड में ईश्वर की सबसे अनमोल कृति है मनुष्य। जिसने प्रागैतिहासिक विकास की लंबी संघर्षपूर्ण भूमिका को जीते हुए इस सृष्टि को गौरवपूर्ण स्थान दिलवाया। साथ ही उसकी रक्षा का भार भी सहर्ष उठाया। उसकी इसी संकल्प शक्ति में मानवतावाद का अखण्ड-श्रोत भी सदा अंतःनिहित रहा हैं। कहने-सुनने की कला से उत्पन्न कहानी ने उसके द्वारा बुलंद किए गए आह्वान में सदा अपनी समर्थ भूमिका का निर्वाह किया है जो आज इस उत्तर आधुनिक कहानी तक पहुँच गई है। मनुष्य से आपसी समन्वय का प्रतीक मानवतावाद जिस अर्थ को व्याख्यापित करता है वह संपूर्ण मानव जाति के कल्याण से संबंधित हैं। राष्ट्र, धर्म, जाति, लिंग, वर्ग इत्यादि के प्रति क्षुद्र संकीर्ण दायरे से बाहर निकलकर मनुष्य एक विस्तृत फलक पर अपना तथा इस समाज का विकास कर सकता है यह संभव भी इसी रूप में हुआ है।

इस दृष्टि से मानवतावाद कोई एकांकी दृष्टि नहीं है। उसका संबंध जीवन के सभी अनुशासनों से हैं। जैसे भयंकर मारकाट अथवा युद्ध में हुए विखण्डन से निबटने के लिए अंततः मानवतावाद की शरण में जाना निश्चित हो जाता हैं। अतः विकास और ह्रास में ये प्रवृत्तियाँ निरंतर बनती-बिगड़ती रहती हैं। कोई भी कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उसमें विखंडन को उत्पन्न करने वाले कारणों पर पूर्व अंकुश न लगाया जाए। भ्रष्टाचार, व्यभिचार, यौन शोषण, भिक्षावृत्ति, अपराध जैसे समाज विरोधी क्रिया-कलापों को रोका न जाए। उस पर गंभीर मंथन न किया जाए। तब तक विकास की संपूर्ण परिकल्पना कैसे साकार होगी। इन्हीं सबके साथ कहानी शंकाओं समाधानों को लेकर चली आ रही हैं। यद्यपि विखण्डन सदैव विध्वंस का ही द्योतक नहीं हैं, बल्कि उसके भग्नावशेष से ही नए निर्माण का स्वप्न भी साकार होता हैं। यह स्थिति इस अर्थ में मानवतावाद और विखण्डित मानवतावाद के संदर्भ में विस्तृत अध्ययन से ही स्पष्ट होती है।

वर्तमान समय में उत्तर-आधुनिकता ने मनुष्य के दैनिक क्रियाकलाप से लेकर उसके संपूर्ण अस्तित्व को अपने प्रभाव में ले लिया हैं। इस बहुलतावादी संस्कृति ने पूरे भूमंडल को प्रभावित किया हैं। आधुनिक माने जाने वाले मूल्यों और धारणाओं का इस समय में अतिक्रमण करके एक भ्रमपूर्ण वातावरण का निर्माण कर दिया हैं।

जिसमें किसी भाव, विचार तथा कार्य के होने की कोई सैद्धांतिकी नहीं रही हैं। जहाँ सब कुछ गत्यात्मकता के कारण स्थिर नहीं रह पाता हैं। यही कारण है कि उत्तर-आधुनिकता को भी एक निश्चित परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता हैं। अपने विस्तृत स्वरूप के कारण यह प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज को अपने यथार्थ तथा आदर्श में अलग ढंग से रूपायित करने की छूट भी देता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उत्तर-आधुनिक कहानी, आधुनिक कहानी का अगला पड़ाव हैं। वर्तमान स्थिति जिसे हम भोग रहे हैं और उस भोगे हुए यथार्थ को कहानी में उतार भी रहे हैं। जिससे कहानी का यथार्थ और अधिक प्रामाणिक तथा तर्कसंगत हो गया है। उसकी विशेषताएँ जैसे बौद्धिकता, व्यंग्य, व्यक्ति की भाषा स्वभावगत भिन्नताएं, कलात्मकता, रुचि वैविध्य, रोमांस, बिंब, शब्द रूपांतरण, चयन की स्वतंत्रता तथा स्पष्टवादिता आदि उभर कर कहानियों के माध्यम से सामने आ रही हैं जिससे कहानी की महत्ता हमारे जीवन में उसकी भूमिका तथा समाज से जुड़े प्रत्येक पहलू पर उसकी अतिरिक्त पकड़ कहीं न कहीं उत्तर-आधुनिकता के साथ उसकी गहरी संपृक्ति को सिद्ध करती हैं।

प्रत्येक कालखण्ड का इतिहास और उसकी परिस्थितियाँ जटिल होती ही हैं। जो निरंतर कहानी की विषयवस्तु तथा उसकी प्रवृत्तियों को बनाती-बिगाड़ती रहती हैं। अंतः एवं बाह्य द्वंद्व निरंतर अपनी सक्रिय भूमिका निभाते ही हैं तो प्राकृतिक आपदाएँ, मनुष्य निर्मित युद्ध तथा विज्ञान का अतिशय हस्तक्षेप वरदान और अभिशाप के रूप में समाज पर प्रभाव डालता ही हैं। धर्म और दर्शन की अपनी वर्जनाएँ तथा सीमाएँ है जो व्यक्ति तथा समाज का शास्त्र गढ़ती रहती हैं। इतने युगों को समेटती कहानी मानवतावाद तथा विखंडित मानवतावाद को सबसे विश्वसनीय तथा प्रामाणिक तरीके से अभिव्यक्ति देती आ रही हैं।

आज जब हम उत्तर-आधुनिक कहानी की बात करते हैं। जो सर्वथा एक नए अनुभव और व्यवहार से हमारा परिचय करवाती हैं क्योंकि हमारे चारों ओर भिन्नता और विविधता हैं। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता है। जिसे किसी भी सीमा में नहीं बांधा जा सकता हैं। पाश्चात्य सांस्कृतिक परिवेश ने पूरी तरह हमारे मनमस्तिष्क पर कब्जा कर लिया है। यह चिंता का विषय भी है। यद्यपि इससे पूर्व की कहानी भी इस तरह के प्रभावों से बच नहीं पायी थी, किंतु उत्तर-आधुनिक कहानी की तो कहानी ही यही हैं। वैश्वीकरण की संस्कृति ने आज के परिवेश पर पूरी तरह से अपना अधिकार कर लिया हैं। जिससे पूर्व की कहानी में तथा उत्तर-आधुनिक कहानी में बहुत ज्यादा अंतर दिखाई दे रहा हैं। आज का कहानीकार अपने देखे-भोगे यथार्थ को बिना किसी संकोच तथा भय के पूरी निर्भीकता और तटस्थता से व्यंजित करने में सक्षम और समर्थ भी हैं। जिससे कई बार कहानी पीछे छूट जाती है और घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ आगे निकल आती है। और यहाँ कहानी की धारा अवरुद्ध ही नहीं, खंडित भी होने लगती हैं। 1980 से प्रारंभ होने वाली उत्तर-आधुनिक कहानी ने इन

तीन दशकों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय सौंदर्य में होने वाले त्वरित परिवर्तन को विविधता में व्यंजित किया है। जहाँ खंडन-विखंडन, शांति, अशांति, मान-अपमान, सब कुछ स्पष्टता से दृष्टिगोचर हो रहा हैं।

यह उस मानवतावादी सोच के विस्तृत होने का ही परिणाम है जिसमें जो कुछ अच्छा है उसे आगे बढ़कर अपनाने का हौसला भी है। चाहे वह किसी देश की संस्कृति का ही परिचायक क्यों न हो। खान-पान, वेशभूषा, विवाह तथा रीति-रिवाजों में रूढ़ियां टूटी है, जो वैश्विक स्तर पर विखंडन से उपजे भय को कम करती हैं।

इस प्रकार उत्तर-आधुनिक कहानी, उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियों को समेटती है, और विखंडन के माध्यम से भी उत्कृष्ट मानवतावाद को स्थापित करने की कोशिश करती है। विखंडन से उपजा सृजन नव-नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाओं को जन्म देता है जिससे जीवन में विविधता और नवीनता आती है। कहना चाहिए कि उत्तर-आधुनिकता कहानी और विखंडित मानवतावाद युग सापेक्ष विषय हैं जिसके माध्यम से कुछ नये आयाम सामने आ रहे हैं जिनसे नई दिशाएँ उजागर हो रही हैं।

प्रो. श्रीमती प्रेम सिंह

अनुक्रम

भूमिका **5**

1. मानवतावाद और विखंडित मानवतावाद 11
2. उत्तर-आधुनिकता का स्वरूप और वर्चस्व 49
3. उत्तर-आधुनिक कहानी : संश्लेषण : विश्लेषण 90
4. कहानी की यात्रा और विखंडित मानवतावाद 134
5. वैयक्तिक स्तर पर विखंडित मानवतावाद और उत्तर-आधुनिक कहानी 165
6. उत्तर-आधुनिक कहानी और सामाजिक विघटन के स्तर पर विखंडित मानवतावाद 193
7. उत्तर-आधुनिक कहानी और परिवार के स्तर पर विखंडित मानवतावाद 224
8. उत्तर-आधुनिक कहानी में विश्वस्तर पर विखंडित मानवतावाद 245
9. उत्तर-आधुनिक कहानी : शिल्प के स्तर पर विखंडित मानवतावाद की अभिव्यक्ति 277
10. उपलब्धियां और संभावनाएँ 294

संदर्भ-ग्रंथ-सूची 301